रूसो एक ऐसे विचारक थे जिन्होंने अपनी "डिस्कोर्सेज इन इक्वलिटी" में समानता पर विशेष विचार प्रस्तुत किए हैं। रूसो के अनुसार प्राकृतिक अवस्था में सम्पत्ति व परिवार के अभाव के कारण ना सिर्फ व्यक्ति समान थे बल्कि स्वतंत्र भी। कालान्तर में वैज्ञानिक आविष्कारों के कारण असमानता की स्थापना हुई तथा मनुष्य वर्गों में विभक्त हो गया।

रूसो के विचार मार्क्स से मिलते हैं परंतु रूसो ने समानता की स्थापना के लिए सशक्त राज्य की अवधारणा पर बल दिया है जबकि मार्क्स ने राज्य को ही असमानता का जिम्मेदार माना है इसलिए उन्होंने राज्य विहीन व्यवस्था की ही समानता की पूर्ण रूप माना है। रूसो ने दो प्रकार की समानता को महत्व दिया है।

(i) प्राकृतिक
(ii) पारम्परिक

रूसो के अनुसार मूल पशु होने के कारण व्यक्तियों की प्रकृति में समानता प्राप्त है जबकि सम्पत्ति के विकास से जिस असमानता की स्थापना हुई है वह पारंपरिक असमानता है।

रूसो के अनुसार मनुष्य तो जन्म से स्वतंत्र है पर वह सभी जगह बंधनों से बंधा है।

बार्कर के अनुसार, समानता की अवधारणा का अर्थ है -

→ सभी की मौलिक समानता।
→ अवसर की समानता।
→ जीवन की स्थितियों को समान बनाने का प्रयास करने वाली स्थितियों की समानता।
→ परिणामों के परिणाम की समानता।

इस प्रकार बार्कर कहते हैं कि "यह व्यक्तित्व के विकास के सर्वोच्च मूल्य से व्युत्पन्न है, प्रत्येक में समान और समान रूप से लेकिन प्रत्येक अपनी अलग रेखा और अपनी अलग गति के साथ"।